डिजिटल द्विमासिक पत्रिका

त्रयोदश अंक

पं0 दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज

(UP Board)

ग्राम व पोस्ट उदयपुर, गोला रोड, लखीमपुर खीरी

सरस्वती पत्रिका

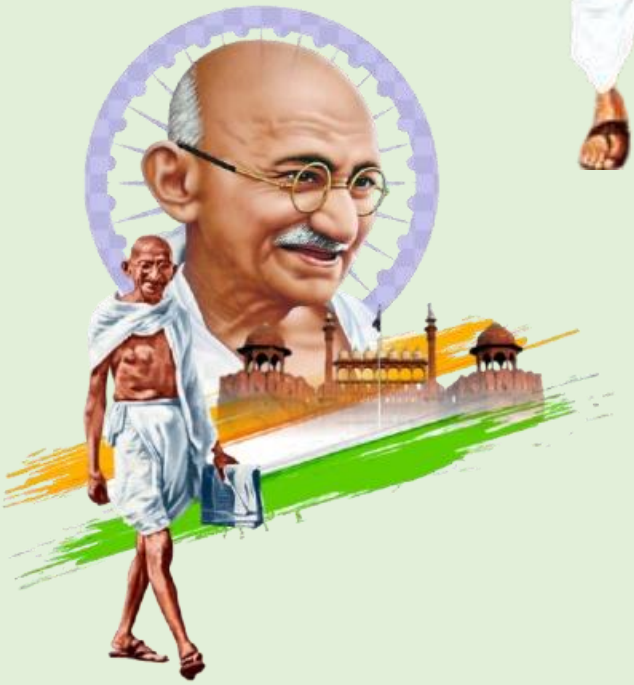

सम्पादक मण्डल

संरक्षक

श्री सुदेश कुमार गुप्त जी
संरक्षक, विद्यालय प्रबन्ध समिति

श्री विमल अग्रवाल जी
प्रबन्धक, विद्यालय प्रबन्ध समिति

मार्गदर्शक

श्री रामजी सिंह जी
प्रदेश निरीक्षक
अवध प्रान्त

श्री सुरेश कुमार सिंह जी
सम्भाग निरीक्षक
सीतापुर सम्भाग

तकनीकी मार्गदर्शन

श्री रवि भूषण साहनी जी
प्रबन्धक
पं.दीनदयाल उपाध्याय स.वि.म.इ.कालेज (CBSE)
लखीमपुर खीरी

प्रधान सम्पादक

डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी
प्रधानाचार्य
पं.दीनदयाल उपाध्याय स.वि.म.इ.कालेज (UP Board)
लखीमपुर खीरी

सम्पादक सहयोगी आचार्य

श्री इन्द्रेश कुमार शर्मा जी
कम्प्यूटर प्रवक्ता
पं.दी.द.उपा.स.वि.म.इ.कालेज (UP Board)
लखीमपुर खीरी

श्री सुधीर कुमार वर्मा जी
कम्प्यूटर लिपिक
पं.दी.द.उपा.स.वि.म.इ.कालेज (UP Board)
लखीमपुर खीरी

सम्पादक की कलम से

सम्मान पाना किसको अच्छा नहीं लगता है, परन्तु सम्मान के पीछे पाने वाले की मेहनत किसी को दिखाई नहीं देती है। एक छात्र जब सुबह उठता है तो सबसे पहले उसे अपनी मेंज पर किताबें दिखाई देती हैं। किसी छात्र को सम्मान दिलाने में कई लोगों की भूमिका होती है जो सामने नहीं दिखती है। इसमें सबसे पहले आते हैं माता–पिता। माता–पिता सुबह से शाम तक बच्चे की पूरी क्रियाओं पर नजर बनाए रखते हैं और बालक को कब, क्या देना है, या कब किस चीज की जरूरत है, उसका पूरा ध्यान रखते हैं। इसके बाद दूसरे स्थान पर आते हैं शिक्षक। शिक्षक बालक की रूचि के अनुसार विभिन्न प्रकार की किताबें उपलब्ध कराते हैं और कक्षा में भी उसे सभी के सामने प्रशंसा करके या किसी प्रश्न का उत्तर पूछ कर प्रशंसा करते हैं जिससे बच्चे का मनोबल बढ़ता है और वह और अधिक मन लगाकर पढ़ाई करता है। तीसरे स्थान पर मित्र आते हैं जो उसे समय–समय पर उसकी कमियों को बताते रहते हैं। छात्र इन कमियों को दूर करते हुए अग्रसर होता है और सम्मान प्राप्त करता है। कभी–कभी कुछ ऐसे मित्र भी मिलते हैं जो सम्मान प्राप्त छात्र से घृणा भी करते हैं और मित्रता की आड़ में नुकसान पहुँचाने का प्रयास करते हैं। सभी छात्रों को ऐसे मित्रों से सावधान रहना चाहिए। इसी प्रकार के मित्र इस समय बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं जो किसी भी विद्यालय एवं छात्र की छवि बिगाड़ने के लिए जिम्मेदार हैं। हम सभी लोगों को ऐसे मित्रों को चिन्हित करके इन्हें बाहर का रास्ता दिखाना है और खुद को तथा विद्यालय को नुकसान से बचाना है।

सभी पाठकों से आग्रह है कि यदि आपको आगे बढ़ना है तो ऐसे असमाजिक तत्वों से बचना होगा और अपने सम्मान की रक्षा करनी होगी। क्योंकि सम्मान प्राप्त करने के पश्चात उसकी रक्षा करना उससे भी अधिक कठिन है। अर्थात जब हम समाज में अपना स्थान बनाते हैं तो समाज की हमसे अपेक्षाएं बढ़ जाती है और जब हम समाज की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते हैं तो सम्मान देने वालों को शक की निगाहों से देखा जाता है।

अतः आप सम्मान भी प्राप्त करें और समाज को साथ लेकर भी चलें।

डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह
प्रधानाचार्य

हमारी गतिविधियाँ

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया शिक्षक दिवस कार्यक्रम

विद्या भारती विद्यालय पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज (यू0पी0बोर्ड) लखीमपुर में वन्दना सभा में शिक्षक दिवस का कार्यक्रम मनाया गया कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ० योगेंद्र प्रताप सिंह जी ने मां सरस्वती एवं भारत रत्न डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन व पुष्पार्चन कर किया इस अवसर पर विद्यालय के आचार्य श्री देवानन्द पाण्डे जी ने स्व लिखित अपनी कविता शिक्षक हूं मैं खुद तो हूं मैं रुका हुआ पर सबको चलना सिखलाता हूं..... प्रस्तुत की। विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री विजय कुमार श्रीवास्तव जी ने बताया कि महान शिक्षाविद, महान शिक्षक, महान राजनेता, भारत रत्न डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिवस को आज हम लोग शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं वह इतने महान व्यक्तित्व के धनी थे कि उन्होंने अपना जन्म दिवस शिक्षकों को शिक्षक दिवस के रूप में समर्पित कर दिया। उन्होंने बताया सर्वपल्ली इनके गांव का नाम था इनके पूर्वज जब अपने गांव को छोड़ रहे थे तो अपने गांव का नाम सदैव याद

रहे इसलिए इन्होंने राधाकृष्णन जी के नाम के आगे अपने गांव का नाम सर्वपल्ली जोड़ दिया। राधाकृष्णन 1962 में भारत के राष्ट्रपति बने, तो उनके छात्र इस दिन को विशेष रूप से मनाने की इजाजत चाहते थे। इसके बजाय, डॉ0 राधाकृष्णन ने सुझाव दिया कि मेरा जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए, ताकि समाज में शिक्षकों के योगदान की सराहना की जा सके। इस अवसर पर भैया शिवम सिंह दीपकमल चौरसिया ने शिक्षक दिवस पर अपने विचार रखें भैया अथर्व मिश्रा ,जिगर सिंह, हर्षित अवस्थी ने, गीत प्रस्तुत किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी ने बताया कि डॉ0 राधाकृष्णन समूचे विश्व को एक विद्यालय मानते थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, विद्वान, शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, राजनायिक, देशभक्त और शिक्षाशास्त्री डॉ. राधाकृष्णन जीवन में अनेक उच्च पदों पर रहते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान देते रहे। उनका कहना था कि यदि शिक्षा सही प्रकार से दी जाए तो समाज से अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के विचार थे कि शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे आज शिक्षक दिवस के अवसर पर विद्यालय के भैयाओ ने छात्र शिक्षक की भूमिका में विद्यालय में शिक्षण कार्य किया एवं भैयाओ ने आज विद्यालय में सभी शिक्षकों की भूमिका एवं दायित्वों का निर्वहन किया इस अवसर पर समस्त विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहा।

संकुल स्तरीय सांस्कृतिक महोत्सव एवं गणित मेला

विद्या भारती विद्यालय पंडित दीनदयाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज (यूपी बोर्ड) लखीमपुर खीरी में सांस्कृतिक महोत्सव और गणित मेले का आयोजन किया गया जिसका शुभारम्भ सीतापुर संभाग के संभाग निरीक्षक श्री सुरेश सिंह जी ने माँ सरस्वती के चित्र के सम्मुख पुष्पार्चन और दीप प्रज्जवलन कर किया उद्घाटन सत्र में डॉ० दिनेश चंद्र मिश्रा प्रदेश मंत्री जन शिक्षा समिति एवं विद्यालय के प्रबंधक श्री विमल अग्रवाल जी एवं विद्यालय के सह प्रबंधक श्री रवि भूषण साहनी जी, एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ योगेंद्र प्रताप सिंह जी उपस्थित रहे विद्यालय में आयोजित समस्त सांस्कृतिक और वैदिक गणित प्रतियोगिताओं में ओवरल चौंपियनशिप में प्रथम स्थान पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज(यूपी बोर्ड) लखीमपुर खीरी ने प्राप्त किया एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज सीबीएसई लखीमपुर खीरी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा तेज महेन्द्रा सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज पलिया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शिशु वर्ग की सांस्कृतिक प्रश्नमंच एवं वैदिक गणित प्रश्नमंच एवम कथाकथन ,गणितीय प्रयोग की प्रतियोगिता में सरस्वती शिशु मंदिर मिश्राना लखीमपुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया शिशु वर्ग की गणित प्रदर्श में डॉक्टर हेडगेवार शिशु मंदिर लखीमपुर में प्रथम स्थान प्राप्त किया बाल वर्ग की सांस्कृतिक प्रश्न मंच प्रतियोगिता में डॉक्टर हेडगेवार सरस्वती शिशु मंदिर लखीमपुर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बाल वर्ग की की वैदिक गणित प्रश्न मंच की प्रतियोगिता में तेज महिंद्रा सरस्वती विद्या मंदिर पलिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया किशोर वर्ग की सांस्कृतिक प्रश्न मंच प्रतियोगिता में पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर सीबीएसई ने प्रथम स्थान प्राप्त किया किशोर वर्ग की वैदिक गणित प्रश्न मंच प्रतियोगिता में तेज महेन्द्रा सरस्वती विद्या मंदिर पालिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया ।तरुण वर्ग की सांस्कृतिक प्रश्न मंच एवं वैदिक गणित प्रश्न मंच में पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज यूपी बोर्ड ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तरुण वर्ग की प्रतियोगिता पत्र वाचन, गणितीय प्रदर्श में पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज सीबीएसई ने प्रथम स्थान प्राप्त किया समस्त विजयी प्रतिभागियों को कार्यक्रम के समापन सत्र में मुख्य अतिथि श्री वी. विक्रमन जी (सहायक महानिदेशक एस० एस० बी०), श्री विमल अग्रवाल जी (प्रबन्धक यू.पी. बोर्ड विद्यालय), श्री रवि भूषण साहनी जी (प्रबन्धक सी.बी.एस.ई. विद्यालय), डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी (प्रधानाचार्य यू.पी. बोर्ड विद्यालय) एवं श्री अरविंद सिंह चौहान जी (प्रधानाचार्य सी.बी.एस.ई. विद्यालय) ने पुरस्कृत किया। इस अवसर संकुल के विद्यालयों के भैया/बहन, प्रधानाचार्य, आचार्य/आचार्या व कर्मचारी भैया उपस्थित रहे।

हिन्दी दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ

आज विद्या भारती विद्यालय पंडित दीनदयाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज (यूपी बोर्ड) लखीमपुर खीरी में वन्दना सभा में हिंदी दिवस का कार्यक्रम मनाया गया जिसका शुभारम्भ विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉक्टर योगेंद्र प्रताप सिंह जी ने माँ सरस्वती के चित्र के सम्मुख पुष्पार्चन और दीप प्रज्जवलन कर किया इस अवसर पर विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री रमेश चंद्र पाठक जी ने बताया कि प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। 14 सितम्बर 1949 को ही संविधान सभा ने यह निर्णय लिया था कि हिन्दी केन्द्र सरकार की आधिकारिक भाषा होगी। चूंकि भारत मे अधिकतर क्षेत्रों में हिन्दी भाषा बोली जाती थी, इसलिए हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और इसी निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को प्रत्येक क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये वर्ष 1953 से पूरे भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी–दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास आदि साहित्यकारों को साथ लेकर राजेन्द्र सिंह ने अथक प्रयास किये।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने बताया गांधी जी ने सर्वप्रथम 1917 में ही हिंदी को राष्ट्रभाषा की मान्यता दी। उसके बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने इसे राजभाषा की मान्यता दी

इसके उपरान्त विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने विद्यालय के समस्त भैया–बहनों आचार्य बंधु और आचार्या बहनों को हिंदी दिवस पर शपथ दिलाई कि *'हम हिन्दी का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में करेंगे, हिन्दी में बोलेंगे, हिन्दी में लिखेंगे, हिन्दी में ही हस्ताक्षर करेंगे। हिन्दी हमारी प्रत्येक गतिविधि में समाई रहेगी'* जय हिन्द, जय हिन्दी!

इस अवसर पर विद्यालय में सुलेख प्रतियोगिता और निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती का कार्यक्रम मनाया गया

विद्या भारती विद्यालय पं0 दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज (यू.पी.बोर्ड) में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती का कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी ने मां सरस्वती जी के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर व पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। इस उपलक्ष्य में विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री राजेंद्र प्रसाद ओझा जी ने बताया की पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितंबर 1916 को मथुरा जिले के नगला चंद्रभान ग्राम में हुआ था पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय था जो नगला चंद्रभान (फरह मथुरा) के निवासी थे उनकी माता का नाम रामप्यारी था जो धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी पिता रेलवे में जलेसर रोड स्टेशन के सहायक स्टेशन मास्टर थे पंडित जी ने मैट्रिक और इंटरमीडिएट दोनों परीक्षाओ को प्रथम श्रेणी में पास किया तथा कानपुर विश्वविद्यालय से बी. ए. करते समय राजनीति में पदार्पण किया और प्रशासनिक परीक्षा भी उत्तीर्ण की थी 1935 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से उनका

जुड़ाव हुआ और 1942 में उन्होंने पूरी तरह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए कार्य करना शुरू कर दिया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चिंतक और संगठनकर्ता थे वे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे थे उन्होंने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्मक मानववाद नामक विचारधारा दी। उन्होंने राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और स्वदेशी जैसी पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी ने बताया की पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी एक समावेशित विचारधारा के समर्थक थे जो एक मजबूत और शसक्त भारत चाहते थे। राजनीति के अतिरिक्त साहित्य में भी उनकी गहरी अभिरुचि थी उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी भाषा में कई लेख लिखें जो विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए उन्होंने कहा हमें महापुरुषों की जयन्ती पर उनके एक गुण को ग्रहण करने का संकल्प लेना चाहिए कार्यक्रम का संचालन आचार्य श्री आलोक कुमार मिश्र जी ने किया। इस उपलक्ष्य पर विद्यालय में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के समस्त आचार्य जी/आचार्या जी नें प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आचार्य श्री प्रमोद कुमार मिश्र ने, द्वितीय स्थान आचार्या श्रीमती ऋतु अवस्थी ने तथा तृतीय स्थान आचार्य श्री सुधीर कुमार वर्मा नें प्राप्त किया। समस्त विजयी प्रतिभागियों को विद्यालय के प्रबन्धक श्री विमल अग्रवाल जी, विद्यालय के सहप्रबन्धक श्री रविभूषण साहनी जी व विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

वोकल फॉर लोकल विषय पर संवाद/सम्भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

विद्या भारती विद्यालय पं0 दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज (यू.पी.बोर्ड), लखीमपुर में 'वोकल फॉर लोकल' विषय पर संवाद/सम्भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ श्री सौरभ त्रिवेदी (जिला संयोजक साइबर भा.ज.पा.), श्री मोहित शुक्ल (भा.ज.पा. युवा मोर्चा उपाध्यक्ष) व विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी ने मां सरस्वती जी के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन व पुष्पार्चन कर किया। प्रतियोगिता में कक्षा 11 व 12 के भैयाओं ने प्रतिभाग किया। जिसमें भैया सौरभ वर्मा, अनुभव पाण्डेय, यश गुप्ता, कार्तिकेय तिवारी, कृष्ण प्रताप सिंह, हर्षित वर्मा, आकर्ष श्रीवास्तव रिषभ वर्मा सहित कुल 15 भैयाओं ने प्रतिभाग किया। जिसमें भैया आकर्ष श्रीवास्तव ने प्रथम स्थान, भैया कृष्ण प्रताप सिंह ने द्वितीय स्थान, भैया रिषभ वर्मा ने तृतीय स्थान तथा भैया अनुभव पाण्डेय ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। विजयी भैयाओं को मुख्य अतिथि महोदय व विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने पुरस्कृत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महोदय ने कहा कि वोकल फार लोकल ये तीन शब्द भारत को आत्म निर्भरता की ओर ले जा रहा है। यह मा0 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आत्म निर्भर भारत के नारे को साकार कर रहे हैं। इन तीन शब्दों का अर्थ है 'वे चीजें जो हमारे पास हैं उनकी ही चाह रखना'। इस योजना के तहत लखीमपुर जिले में ट्राइवल क्राफ्ट के उद्योग को देश स्तर पर चुना गया था। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी ने बताया कि गाँधी जी ने भी स्वदेषी आन्दोलन चलाया था तथा स्वदेशी अपनाओ और विदेशी भगाओ का नारा दिया था। ज्यादा लोकल यूज के कारण ही सैमसंग, नोकिया जैसी छोटी कम्पनियां आज ग्लोबल कम्पनियां बन गयी हैं। हमे इस अवसर पर प्रधानमंत्री जी के आत्म निर्भर भारत के सपने को साकार करने का संकल्प लेना चाहिए। आये हुए अतिथियों का आभार विद्यालय के आचार्य श्री देवानन्द पाण्डेय जी ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन विद्यालय आचार्य श्री शिवमुनीश मिश्रा जी ने किया। इस अवसर पर समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

गाँधी जयन्ती एवं लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती का कार्यक्रम मनाया गया

आज विद्या भारती विद्यालय पं0 दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इन्टर कालेज (यू.पी. बोर्ड) लखीमपुर खीरी में गाँधी जयन्ती एवं लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती का कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी ने ध्वजारोहण कर एवं विद्यालय के प्रथम सहायक श्री कुन्तीश अग्रवाल जी नें माँ सरस्वती जी तथा गाँधी जी व शास्त्री जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर, फोटो पर माल्यार्पण एवं पुष्पार्चन कर किया। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्य श्री देवानन्द पाण्डेय जी ने बताया कि मोहनदास करमचन्द गाँधी जिन्हें हम लोग बापू के नाम से जानते हैं, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं अध्यात्मिक नेता थे। इनका जन्म

2 अक्टूबर 1869 में पोरबन्दर गुजरात में हुआ था। गाँधी को महात्मा के नाम से सबसे पहले 1915 में राज वैद्य जीवनराम कालीदास ने सम्बोधित किया था। गाँधी जी को बापू से सम्बोधित करने वाले प्रथम व्यक्ति उनके आश्रम के शिष्य थे। सुभाष चन्द्र बोस ने रंगून से रेडियो द्वारा गाँधी जी के नाम जारी प्रसारण में उन्हें राष्ट्र पिता कहकर सम्बोधित करते हुए आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के लिए आर्शीवाद माँगा था। उन्होंने बताया कि आज के दिन ही भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शाष्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को मुगलसरांय में हुआ था। इनके पिता का नाम शारदा प्रसाद श्रीवास्तव एवं माता का नाम राम दुलारी देवी था। इनका लगभग 18 महीने का कार्यकाल अद्वितीय रहा। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्य श्री सर्वेन्द्र कुमार अवस्थी जी ने बताया कि शास्त्री जी को 1966 में देश के सबसे बड़े सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया। भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान विकट परिस्थितियों में शास्त्री जी ने देश को संभाला तथा जय जवान जय किसान का नारा देश को दिया तथा 11 जनवरी 1966 को ताशकन्द में भारत पाकिस्तान समझौते के दौरान इनकी मृत्यु हो गई। विद्यालय की आचार्या श्रीमती हिमान्शी श्रीवास्तव जी ने हे राम! हे राम..... भजन सुनाकर माहौल को और सुन्दर बना दिया।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रथम सहायक श्री कुन्तीश अग्रवाल जी ने बताया कि गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा के पथ पर चलकर देश को आजादी दिलायी, इसलिये आज 2 अक्टूबर का दिन अर्न्तराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रुप में मनाया जाता है। उन्होंने बताया शास्त्री जी के समय भारत खाद्यान के मामले में आत्मनिर्भर नहीं था, शास्त्री जी ने अमेरिका से गेहूँ माँगना मंजूर नहीं किया बल्कि अपने देश के नागरिकों से सप्ताह में एक दिन उपवास रखने को कहा। उन्होने कहा हमें प्रत्येक महापुरुष की जयन्ती पर उनका एक गुण अवश्य ग्रहण करना चाहिये तथा अपनी एक बुराई का त्याग करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन आचार्य श्री आशीष मोहन बाजपेयी जी ने किया।

इस अवसर पर गाँधी जी व शास्त्री जी के जीवन पर आधारित एक परीक्षा का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के सभी आचार्य जी ने भाग लिया। इस परीक्षा में प्रथम स्थान आचार्य श्री हिमान्शु रस्तोगी जी, द्वितीय स्थान आचार्य श्री आलोक कुमार मिश्र व आचार्य श्री आयुष वर्मा जी ने तथा तृतीय स्थान आचार्य श्री इन्द्रेश कुमार शर्मा जी ने प्राप्त किया। इन सभी आचार्य जी को विद्यालय के प्रथम सहायक श्री कुन्तीश अग्रवाल जी ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

नवमी एवं विजयादशमी का कार्यक्रम मनाया गया

विद्या भारती विद्यालय पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज (यूपी बोर्ड) लखीमपुर खीरी में नवमी एवम् विजयदशमी की पूर्व संध्या पर विद्यालय में कन्या पूजन एवं रामायण से संबंधित राम रावण युद्ध का मंचन किया गया और महारानी अहिल्याबाई होलकर के बारे में बताया गया और अहिल्याबाई होलकर की रूप सज्जा भी की गई । इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेंद्र प्रताप सिंह ने महारानी अहिल्याबाई होलकर के न्याय की कहानी भी सुनाई।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया विद्यालय में महर्षि वाल्मीकि प्रकटोत्सव

विद्या भारती विद्यालय पंडित दीनदयाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज (यूपी बोर्ड) लखीमपुर खीरी में वन्दना सभा में महर्षि वाल्मीकि जी की जयंती का कार्यक्रम मनाया गया जिसका शुभारम्भ विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉक्टर योगेंद्र प्रताप सिंह जी तथा मुख्य अतिथि बन्धु श्री से सचिन वाल्मीकि (जिला सहसंयोजक बजरंग दल), श्री नरेश सिंह निराला जी (स्वच्छता नायक नगर पालिका परिषद लखीमपुर खीरी) डॉ अश्वनी गुप्ता (आरोग्य भारती के विभाग संयोजक)ने माँ सरस्वती एवं महर्षि वाल्मीकि के चित्र के सम्मुख पुष्पार्चन और दीप प्रज्जवलन कर किया इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सचिन वाल्मीकि जी ने बताया महाकवि वाल्मीकि का जन्म अश्विन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के दिन त्रेता युग में हुआ था यह अपने जीवन के प्रारंभ में लोगों के साथ लूटपाट करते थे उस समय लोग इन्हें रत्नाकर डाकू के नाम से जानते थे देव ऋषि नारद के संपर्क में आने के बाद यह महर्षि वाल्मीकि बने नारद जी ने ही इन्हें राम नाम का उच्चारण करवाया तथा राम नाम जपने के लिए नारद जी ने ही इनसे कहा था जब इन्होंने राम नाम की कठोर तपस्या कई वर्षों तक की तब इनके शरीर पर दीमक ने चारों ओर अपनी बॉबी बना ली थी इसी के कारण इनका नाम वाल्मीकि पड़ गया इस अवसर पर श्री नरेश सिंह निराला जी ने प्रकट हो गए बाल ऋषि जी .....और सरस्वती मां जी के कूचे में..... सुंदर भजन प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर डॉक्टर अश्वनी गुप्ता जी ने बताया *'उल्टा नाम जपत जग जाना बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना'* भगवान वाल्मीकि जी ने जिनका उल्टा नाम जप कर पूरे संसार में अपना नाम किया ऐसे भगवान राम के नाम को हम लोगों को अवश्य ही जपना चाहिए जिससे हम सभी का जीवन धन्य हो सके।

इस अवसर पर विद्यालय के भैया शिवम सिंह, अर्पित तिवारी, शिवाय तिवारी ने महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन के बारे में बताया अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ योगेन्द्र प्रताप सिंह जी ने बताया महर्षि वाल्मीकि जी भगवान राम के पुत्र लव और कुश के गुरु थे लव कुश ने भगवान राम की पूरी सेना को परास्त कर दिया था ऐसे महान गुरु को हर कोई प्राप्त करना चाहेगा इन्हीं के नाम पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने अयोध्या के हवाई अड्डे का नाम भी महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा रखा है

इस अवसर पर विद्यालय में कल आयोजित हुई महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विजई आचार्य बन्धुओं एवं आचार्या बहनों को सम्मानित किया गया अंत में इस शुभ अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ योगेंद्र प्रताप सिंह जी ने विद्यालय में कार्यरत वाल्मीकि समाज के स्वच्छता कर्मी भैया जी और मैया जी को उपहार देकर सम्मानित किया कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के आचार्य श्री आशीष मिश्रा जी ने किया इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

क्षेत्रीय विज्ञान मेला में स्थान प्राप्त भैयाओं को सम्मानित किया गया

विद्या भारती विद्यालय पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज (यू0पी0बोर्ड), लखीमपुर में आज वन्दना सभा में क्षेत्रीय विज्ञान मेला में विज्ञान प्रदर्श बाल वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त भैया आराध्य गिरी व विज्ञान प्रयोग तरूण वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त भैया शिवा दीप को विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी नें मेडल पहनाकर व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। प्रधानाचार्य जी नें दोनों भैयाओं को शुभकामनाएं दीं तथा सभी भैया/बहनों को बताया कि यदि आप अच्छी मेहनत और लगन के साथ किसी भी चीज में प्रतिभाग करते हैं चाहे वो कोई प्रतियोगिता हो या आपकी परीक्षाएं सफलता अवश्य मिलती है।

अर्थव्यवस्था का सशक्तीकरण सबसे बड़ी माँ लक्ष्मी की पूजा

विद्या भारती विद्यालय पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज (यू.पी.बोर्ड), लखीमपुर में प्रधानाचार्य डॉक्टर योगेंद्र प्रताप सिंह की प्रेरक अध्यक्षता तथा आचार्य श्री सर्वेन्द्र अवस्थी के सफल संचालन में ज्योति पर्व दीपावली प्रकाश की साधना का पर्व बताया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह ने इसे हर प्रकार के अंधकार के विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध का उद्घोष बताया। समाज जीवन की वैचारिक जड़ता–जर्जरता, सभी प्रकार की दुर्बलताओं, रूढ़ियों के समूल उन्मूलन का संकल्प लिया गया। मुख्य विषय प्रतिपादित करते हुए जिले के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेश दीक्षित जी ने अर्थव्यवस्था का सशक्तीकरण, सुदृढ़ीकरण सर्वश्रेष्ठ मां लक्ष्मी की पूजा बताया। इसके लिए उन्होंने अर्थव्यवस्था के विकेन्द्रीकरण, अर्थ का संचरण समाज के निचले से निचले स्तर तक करने की बात कही। इसके लिए पूरे देश में लघु कुटीर उद्योगों का सघन जाल, प्राकृतिक जैविक खेती को प्रोत्साहन, गौ पालन, कृषि केंद्रित अर्थव्यवस्था बनाने की बात कही गई। हम न अर्थ के अभाव में जियें, न ही हम धन के प्रभाव को स्वीकार करें। हमारी शिक्षा, हमारे संस्कार, हमारा चरित्र ही हमारे सबसे बड़ी पूंजी एवं ताकत है। उन्होंने कहा कि हमारे तत्वदर्शी मानीषियों ने अर्थ में छिपे अनर्थ को काफी अच्छी तरह से पहचाना। जीवन जीने के लिए धनार्जन आवश्यक है, मगर आज हम कहीं धनार्जन के लिए अपना बहुमूल्य जीवन गवां रहे हैं। धर्म एवं मोक्ष के नियंत्रण में अर्थ एवं काम मानव के लिए कल्याणकारी है। हम स्वदेशी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद को समुचित प्रोत्साहन दें। विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए बी.ए.एम.एस. प्रथम वरीयता बने न कि एम.बी.बी.एस.। स्वदेशी स्वावलम्बन एवं स्वाभिमान हमारी सबसे बड़ी पूंजी एवं ताकत है। इसके लिए हमें अपनी संकल्प शक्ति एवं आत्मविश्वास को बढ़ाना होगा। इस अवसर पर विद्यालय के सभी आचार्य एवं छात्र–छात्राएं बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

संयुक्त मेधा अलंकरण एवं वार्षिकोत्सव समारोह–2024

दिनांक 28–10–2024 दिन सोमवार को दोपहर 02:30 बजे पं0 दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज (यू.पी.बोर्ड व सी.बी.एस.ई), लखीमपुर एवं सनातन धर्म

सरस्वती विद्या मन्दिर बालिका इण्टर कॉलेज, मिश्राना, का 'संयुक्त मेधा अलंकरण एवं वार्षिकोत्सव समारोह' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन, पुष्पार्चन एवं ज्ञानदायिनी मां सरस्वती की वन्दना से हुआ। डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह जी (प्रधानाचार्य .प.दी.द.उ.स.वि.म.इं.का. यू.पी.बोर्ड) ने मंचासीन अतिथि महानुभावों का परिचय कराया एवं विद्यालयों की संक्षिप्त आख्या प्रस्तुत की।

मेधा सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान यतीन्द्र शर्मा जी (माननीय अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्या भारती अखिल भारती शिक्षा संस्थान) अध्यक्ष के रूप में मा0 श्री हरेन्द्र श्रीवास्तव जी (अध्यक्ष, भारतीय शिक्षा मंत्री उ0प्र0), विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रामजी सिंह जी (प्रदेश निरक्षक, भारतीय शिक्षा समिति उ0प्र0), श्री शेषधर द्विवेदी जी (प्रदेश निरीक्षक काशी प्रान्त), श्री अवरीश जी (संभाग निरीक्षक, साकेत संभाग), श्री सुरेश जी (संभाग निरीक्षक, सीतापुर संभाग) उपस्थित रहकर छात्र/छात्राओं का उत्साहवर्धन एवं मार्गदर्शन किया।

मा0 यतीन्द्र जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि की रचना की तब सभी पशु पक्षियों को कुछ न कुछ सीखा कर भेजा परन्तु मनुष्य को कुछ नही सिखाया लेकिन उसे बुद्धि प्रदान की जिससे वे बुद्धि का प्रयोग कर दूसरों को सिखाएं व दूसरों को आगे बढ़ायें इसलिए बच्चों को अपनी बुद्धि के विकास के लिए सीखते रहना चाहिए। छोटे से गाँव नगला चन्द्रभान में जन्में पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के ग्राम को आज दीनदयाल धाम के नाम से जाना जाता है। उन्हीं महापुरुष के नाम पर इस विद्यालय का नाम रखा गया। दीनदयाल जी का बचपन कठोर संघर्ष में बीता, हम सभी बच्चों को उनके जीवन से सीख लेना चाहिए। अभिभावकों को भी अपने पाल्यों की शिक्षा पर ध्यान देना चाहिये, यह अभिभावकों का बच्चों के प्रति दायित्व है, क्योंकि परिवारों में संस्कारक्षम वातावरण बनाना हम सबका कर्तव्य है। स्वच्छता एवं ऊर्जा बचत पर ध्यान देना। बच्चों के साथ प्रतिदिन बातें करना चाहिये। अध्यापकों को नवीन शिक्षा प्राणाली के अनुसार बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देना चाहिए। अध्यापक तथा अभिभावक मिलकर योग्य नागरिक बनावें जिससे भारत पुनः विश्वगुरु के रूप में स्थापित हों। विद्या भारती विश्व का सबसे बड़ा गैर शासकीय शैक्षिक संगठन है। वर्तमान समय में विद्या भारती का विस्तार सम्पूर्ण भारत वर्ष में है। विद्याा भारती से सम्बद्ध प्राथमिक से लेकर महाविद्यालय स्तर तक 25000 से अधिक

शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं। इनके अतिरिक्त सेवा बस्तियों में लगभग 2500 संस्कार केन्द्र तथा छोटे ग्रामों में 1800 से अधिक एकल विद्यालय राष्ट्र के शैक्षिक उन्नयन में संलग्न हैं।

प्रत्येक विद्यालय में हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय का गौरवान्वित करने वाले छात्रों को गोल्ड मेडल एवं प्रशस्ति पत्र एवं उनके अभिभावकों को 'गौरवशाली अभिभावक' पुरस्कार तथा अन्य सर्वश्रेष्ठ 9 स्थानों पर रहने वाले छात्रों को सिल्वर मेडल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सनातन धर्म सरस्वती विद्या मन्दिर बालिका इण्टर कॉलेज में इण्टरमीडिएट में सर्वाधिक अंक भाव्या सिंह एवं हाईस्कूल परीक्षा में सर्वाधिक अंक भूमि मौर्या, पं0 दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज (यू.पी. बोर्ड) में इण्टरमीडिएट में सर्वाधिक अंक, आदर्श मौर्या एवं हाईस्कूल परीक्षा में सर्वाधिक अंक सौरभ वर्मा एवं पं0 दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज (सी.बी.एस.ई. बोर्ड) में इण्टरमीडिएट में सर्वाधिक अंक नितेश वर्मा एवं हाईस्कूल परीक्षा में सर्वाधिक अंक शिवांश मिश्रा आदि भैया/बहनों को माननीय मुख्य अतिथि जी के द्वारा गोल्ड मेडल देकर प्रोत्साहित किया गया। तीनो ही विद्यालयों के 7–7 आचार्य/आचार्याओं को उनके सर्वश्रेष्ठ योगदान हेतु सम्मानित किया गया। साथ ही विद्यालयों के कर्मचारियों में से भी विशिष्ट कार्य हेतु दो–दो कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया।

विद्यालयों में विविध क्षेत्रों जैसे –विज्ञान, संगीत, खेलकूद आदि में विशिष्ट योगदान देने वाले छात्र/छात्राओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। विद्यालयों में गत तीन वर्षों से निरन्तर शत प्रतिषत उपस्थित रहने वाले छात्र/छात्राओं को विशिष्ट पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर छात्र/छात्राओं द्वारा अनेक मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम, भजन एवं गीत प्रस्तुत किए गये। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री कुन्तीश अग्रवाल जी एवं श्री आलोक अवस्थी जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम को अतिथियों, नगर के गणमान्य नागरिकों, अभिभावकों तथा छात्र/छात्राओं ने अपनी उपस्थिति से सफल बनाया।

मंजिल की ओर

यद्यपि कि जीत नहीं पाए,
पर हार नहीं हमने मानी,
संघर्षों से मैं डर जाऊँ तो,
होगी खुद से बेईमानी।

मंजिल पाने की जिद मेरी,
मर जाऊँगा यह जिद लेकर,
पर खो दूँ मैं हिम्मत अपनी,
यह जुल्म सहूँ कैसे खुद पर।

अरमां है मेरी जिन्दा दिल में,
यह मेरे मन की ताकत है,
तुम क्यों हँसते हो मेरे ऊपर,
जीतूँगा मेरी यह फितरत है।

हार गया मैं आज अगर,
अन्तिम यह नहीं परीक्षा है।
आज नहीं तो कल जीतेंगे,
यह शपथ नहीं दृढ़ इच्छा है।

आज नहीं तो कल फिर से,
अपना संसार सजाऊँगा,
तुम जैसे हँसने वालों की,
महफिल में फिर न आऊँगा।

अपनी दुनियाँ का शहँशाह मैं,
खुद के दिल का मै राजा हूँ,
अपने सपनों की बाजारों में,
कीमत रखता कुछ ज्यादा हूँ।

आचार्य– श्री विजय कुमार श्रीवास्तव
जीव विज्ञान प्रवक्ता

एकता का सामर्थ्य

एक समय अंग्रेजों का राज्य था। एक स्थान पर धार्मिक कार्यक्रम था। कार्यक्रम समाप्त होने पर पुरूष मंडली बाहर निकली। महिलाएं भी बाहर निकल रहीं थी उसी समय दो गोरे आरक्षक शराब पीकर महिलाओं के द्वार के सामने आकर खड़े हो गए। अनर्गल बातें कहते हुए उन्होंने महिलाओं का मार्ग रोका। उस कारण उन महिलाओं को बाहर निकलते नहीं बन रहा था। उनके घर के लोग उसी द्वार के सामने उनकी राह देख रहे थे, परन्तु उन गोरे आरक्षकों को रास्ता छोड़ने के लिए कहने का किसी ने भी साहस नहीं किया। बहुत समय ऐसा ही निकल गया।

उसी समय मार्ग से दो मराठी युवक जा रहे थे। दरवाजे के बाहर भीड़ देखकर वहां क्या चल रहा है, इसकी उन्होंने पुछताछ की। जब उन्हें परिस्थिति का ज्ञान हुआ, तब उनमें से एक युवक ने अपने मित्र से कहा, ''चलो, हम मिलकर उन महिलाओं की मद्द करें ।'' उस पर मित्रने कहा, ''माधव, क्यों बेकार की झंझट अपने पीछे लगा रहे हो?'' इतना कहकर वह मित्र चला गया। लेकिन माधव से रहा नहीं गया। वह पुरूषों की भीड में जाकर सबको उद्देशित कर बोला, ''हटाओ न उन गोरे आरक्षकों को!'' सबको उसका कहना उचित लग रहा था, परन्तु उनके सामने प्रश्न था कि 'कौन आगे आएगा?' इसीलिए सभी चुप थे यह माधव के ध्यान में आया। 'चलो मैं आगे बढता हूं' ऐसा कहकर माधव उन आरक्षकों के पास जाने लगा । धीरे–धीरे लोग भी आगे सरकने लगे। आरक्षकों के पास जाकर माधव ने उन आरक्षकों को धमका कर कहा, ''यहां से चले जाओ। नहीं जाओगे तो हमारा जत्था देख रहें हो ना?'' उसकी कड़ी आवाज और गुस्सा देखकर वे आरक्षक घबराए और वहां से भाग गए। लोगों ने माधव को धन्यवाद दिया। माधव ने कहा, ''आप इतने लोग होकर भी उन दोनों को देखकर घबरा गए ? हमनें अपनी संगठित शक्ति दिखाई नहीं तो वे हमारी कमियों का लाभ ही लेंगे। सामने वाले की शक्ति को देखकर घबराने की अपेक्षा उन्हें अपनी एकता की शक्ति दिखाएं।'' यही युवक माधव आगे चलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनेक वर्षों तक सर संघचालक रहे।

प्रिय भैया/बहनों, इस कहानी द्वारा एकता का सामर्थ्य ध्यान में आया होगा। हम अकेले कुछ नहीं कर सकते, परन्तु हम संगठित होने पर निश्चित ही विजयी होते हैं। कोई भी लड़ाई लड़नी हो, तो संगठित होना आवश्यक है।

आचार्य– श्री सुधीर कुमार वर्मा
कम्प्यूटर लिपिक